Edit with WPS Office

वीर कुणाल

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 महाराज अशोक ने कुणाल को तक्षशिला क्यों भेजा ?

उत्तर - तक्षशिला की प्रजा ने विद्रोह कर दिया था।राज्य की पश्चिमोत्तर सीमा से यवनों के आक्रमण का भय था ।इसीलिए महाराज

Edit with WPS Office

अशोक ने कुणाल को तक्षशिला भेजा ।

प्रश्न 2 तिष्यरक्षिता ने अशोक से क्या पुरस्कार माँगा ?

उत्तर - तिष्यरक्षिता ने अशोक से एक दिन का राज्य-शासन और राजमुहर भी एक दिन के लिए

Edit with WPS Office

पुरस्कार के रूप में माँगा।

प्रश्न 3 कुणाल ने तक्षशिला के शासक से क्या कहा ?

उत्तर - कुणाल ने तक्षशिला के शासक से कहा कि वह राजा की आज्ञा का पालन करते हुए उसे अंधा करके राज्य से बाहर निकाल दे।यदि वह ऐसा नहीं करेगा

Edit with WPS Office

तो उसे पद से हटा दिया जाएगा।

प्रश्न 4 कुणाल और कंचना किस तरह अपना जीवन बिताने लगे ?

उत्तर - कुणाल और कंचना सब कुछ छोड़कर भिक्षु बन गए और इधर-उधर घूम-घूमकर गान करने लगे।

Edit with WPS Office

प्रश्न 5 महाराज अशोक ने कुणाल को कैसे पहचाना ?

उत्तर - महाराज अशोक कुणाल से उसका परिचय पूछते हैं और जवाब में 'अशोक का पुत्र ' उत्तर मिला ।इस प्रकार महाराज अशोक ने कुणाल को पहचान लिया ।

अतिरिक्त प्रश्न

Edit with WPS Office

प्रश्न1 - कुणाल की सौतेली माँ का नाम क्या था ?

उत्तर - कुणाल की सौतेली माँ का नाम तिष्यरक्षिता था।

प्रश्न 2- कुणाल कहाँ का शासन कर रहा था ?

उत्तर - कुणाल पंजाब का शासन कर रहा था।

प्रश्न 3- कुणाल के साथ और

Edit with WPS Office

कौन तक्षशिला गया था ?

उत्तर - कुणाल के साथ उसकी पत्नी कंचना तक्षशिला गई थी।

प्रश्न 4- महाराज अशोक को क्या कष्ट था ?

उत्तर - महाराज अशोक के पेट में कीड़े हो गए थे जिससे उनके पेट में और सिर में

Edit with WPS Office

हमेशा पीड़ा हो रही थी ।

प्रश्न - कुणाल को अंधा करके राज्य से बाहर करने का आदेश किसने दिया था ?

उत्तर - कुणाल को अंधा करके राज्य से बाहर करने का आदेश तिष्यरक्षिता ने राजमुहर की आड़ लेकर दिया था ।

Edit with WPS Office

प्रश्न -तक्षशिला के शासक के पास आज्ञापत्र कब आया ?

उत्तर - तक्षशिला के शासक के पास जब आज्ञापत्र आया तो उस समय कुणाल और कंचना शिकार खेलने गए थे ।

प्रश्न - कुणाल और कंचना कितने वर्ष तक राज्य से

Edit with WPS Office

बाहर थे ?

उत्तर - कुणाल और कंचना पंद्रह वर्ष तक राज्य से बाहर थे।

प्रश्न - कुणाल और कंचना ने कहाँ का पूर्ण पर्यटन कर डाला था ?

उत्तर - कुणाल और कंचना ने दक्षिण भारत का पूर्ण

Edit with WPS Office

पर्यटन कर डाला था ।

प्रश्न - कुणाल ने प्रभात बेला में किस राग में गीत गाया ?

उत्तर - कुणाल ने प्रभात बेला में भैरवी राग में गीत गाया।

प्रश्न - कुणाल और कंचना को कोई क्यों पहचान न सका ?

उत्तर - कुणाल और कंचना

Edit with WPS Office

को शारीरिक अवस्था तथा रहन-सहन की प्रतिकूलता के कारण कोई पहचान न सका।

प्रश्न - महाराज अशोक ने कुणाल को राज्य देकर क्या किया ?

उत्तर - महाराज अशोक ने कुणाल को राज्य देकर

Edit with WPS Office

संन्यास ले लिया और वन में तप करने चले गए ।

प्रश्न - तिष्यरक्षिता के अपराध स्वीकार करने पर महाराज ने क्या किया ?

उत्तर - तिष्यरक्षिता के अपराध स्वीकार करने पर महाराज ने उसकी दोनों आँखें निकालने और सब

Edit with WPS Office

अंग एक - एक करके काट देने का आदेश दिया ।

प्रश्न-' वीर कुणाल' कहानी का सारांश लिखिए ।

उत्तर - वीर कुणाल महाराज अशोक का एक मात्र पुत्र था जिसे महाराज बहुत प्यार करते थे । एक बार महाराज को यात्रा में कंचना नाम की

Edit with WPS Office

कन्या मिली जिसका पालन -पोषण उन्होंने कुणाल के साथ ही उसी की तरह किया। बाद में युवा होने पर दोनों का विवाह करा दिया ।

एक बार महाराज ने कुणाल को विद्रोही प्रजा को दमन करने और यवनों के आक्रमण के खतरे को कम करने के लिए तक्षशिला भेजा ।कुणाल ने दोनों स्थितियों का मुकाबला किया ।महाराज की आज्ञा से कुणाल कंचना के साथ तक्षशिला में रहकर पंजाब का शासन चलाने लगा ।इधर महाराज के उदर में कीड़े हो गए जिनसे उनके सिर

Edit with WPS Office

और पेट दोनों में दर्द होने लगा ।कोई इस समस्या का समाधान न कर पाया।महाराज इस बात से काफी चिंतित थे। महाराज की दूसरी पत्नी तिष्यरक्षिता ने उनकी बड़ी सेवा की, पर कोई लाभ न हुआ ।अंत में उसके निर्देश से राज्य कर्मचारियों ने महाराज की तरह ही रोगी ढूँढ़ा।तिष्यरक्षिता ने उस रोगी का पेट फाड़ डाला और उन कीड़ों को कई औषधियों से मारने का यत्न किया ।अंत में वे कीड़े लहसुन के रस से मर गए ।

तिष्यरक्षिता इससे काफी प्रसन्न हुई ।

Edit with WPS Office

उसने महाराज से कहा कि वह उन्हें ठीक कर देगी और वे उसे पुरस्कार के रूप में एक दिन का शासन और राजमुहर प्रदान करें।महाराज ने यह शर्त स्वीकार कर ली ।तिष्यरक्षिता के उपचार से महाराज पूरी तरह से ठीक हो गए और तिष्यरक्षिता का शासन और राजमुहर दोनों पर अधिकार हो गया ।इस स्थिति का फायदा उठाकर तिष्यरक्षिता ने एक आज्ञापत्र तक्षशिला के शासक के पास भेजा जिसमें कुणाल को अंधा करके राज्य से बाहर निकालने की बात कही गई

Edit with WPS Office

थी ।तक्षशिला का शासक यह जानकर काफी चिंतित हुआ ।उसने सोचा कि यह पत्र जाली हो सकता है ।महाराज अपने पुत्र के लिए यह आज्ञा नहीं दे सकते ।इसलिए महाराज को पत्र लिखने से पहले उसने कुणाल के साथ चर्चा की ।।कुणाल ने उसे राजा की आज्ञा का पालन करने को कहा। और यदि वह ऐसा नहीं करता तो उसे पद से हटा दिया जाता ।इसीलिए कुणाल की इच्छा के अनुसार उसे अंधा कर दिया गया । कुणाल ने कंचना की प्रतीक्षा की और उसके आने पर राज्य

Edit with WPS Office

से बाहर जाने के लिए विदा माँगी ।कंचना पहले तो कुणाल को इस अवस्था में देखकर बेहोश हो गई, किंतु बाद में उसने अपने आपको भी अंधा करा देने की बात कही ।कुणाल ने उसे ऐसा करने से मना किया और कहा कि वह माता-पिता की सेवा में जीवन बिताए।कंचना ने कहा कि वह कुणाल को इस हालत में नहीं छोड़ सकती ।मृत्यु को छोड़कर वह कभी भी कुणाल के बिना नहीं रह सकती थी ।अंत में दोनों ने राज्य छोड़ दिया ।

Edit with WPS Office

अब वे संसार से विरक्त होकर भिक्षु बन गए और गीत गा - गाकर जीवन - यापन करने लगे । इस प्रकार पंद्रह वर्ष बीत गए ।उन्होंने संपूर्ण दक्षिण भारत का पर्यटन किया और भगवान् की चर्चा हमेशा करने लगे। अब वे बंगाल होते हुए पटना फिर से वापस आ गए ।उनका शरीर भूख-प्यास और धूप छाँह झेलकर बदल गया था ।उन्हें अब कोई पहचान नहीं पा रहा था। दोनों गा - गाकर भिक्षा माँगने लगे।महाराज के राजशाला का कर्मचारी संगीत का बड़ा प्रेमी था।उसने उन्हें आश्रय दिया

Edit with WPS Office

।सुबह उठकर कुणाल ने राग भैरवी में गीत गाया जिसे महाराज ने सुना और उन्हें कुणाल की याद आ गई ।बाद में महाराज की आज्ञा से उन्हें दरबार में लाया गया ।दोनों ने मिलकर मनोहर गीत गाया ।महाराज ने भिक्षु से उसका पूर्व परिचय पूछा।उसने जैसे ही बताया कि वह महाराज का पुत्र कुणाल है वैसे ही महाराज अचेत हो गए ।जब चेतना सँभली तो कुणाल को छाती से लगा लिया ।महाराज की आँखों से अश्रु धारा बह रही थी । कुणाल के अंधा होने का कारण जानकर महाराज

Edit with WPS Office

क्रोधित हो गए और उन्होंने तिष्यरक्षिता को अंधा करने ,उसके अंग-अंग काट डालने का आदेश दिया ।बाद में कुणाल ने माता के अपराध को क्षमा करने का निवेदन किया और महाराज ने उसे स्वीकार कर लिया ।यह सब होते ही कुणाल के आँखों की रोशनी वापस आ गई । दरबार में सबको आश्चर्य हुआ ।महाराज ने कुणाल को राजा बना दिया और संन्यास लेकर वन में तप करने चले गए ।

Edit with WPS Office